3.4.5

वैश्विक महामारी कोविड-19 का प्रवासी महिला श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्थित पर प्रभाव-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

Author(s): अशोक कुमार देवांगन, फलेन्द्र कुमार साहु, डॉ. एल.एस. गजपाल

Email(s): ashokdewangan.pr@gmail.com , gajpal14@gmail.com

Address: समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

Published In: Volume - 28, Issue - 1, Year - 2022

ABSTRACT:

विश्व अर्थतंत्र के महत्वपूर्ण इकाई होने के बाद भी श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। खासकर श्रम-प्रवास में प्रवासी महिला श्रमिकों के लिए यह स्थिति बेहद दयनीय है। विकासशील देश भारत में प्रवासी श्रमिकों के संबंध में विभिन्न समस्याएं एवं संकट मौजूद हैं। अनेक शोध अध्ययन यह दर्शाते है कि श्रम प्रवास में महिलाओं की स्थिति सकारात्मक कम बल्कि नकारात्मक अधिक परिणीत हुए हैं। विशेषकर वैश्विक महामारी कोविड-19 से प्रवासी श्रमिक महिलाएं अधिक प्रभावित हुई हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर जिले के प्रभावित 80 महिला प्रवासी श्रमिकों से अर्द्ध संरिचत साक्षात्कार अनुसूची उपकरण के माध्यम से तथ्य संकलन किया गया है एवं कोविड-19 महामारी के कारण सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर हुए प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। प्रस्तुत अध्ययन प्रवासी महिला श्रमिकों की सामाजिक असमानता, जीवन संकट एवं आर्थिक असुरक्षा की निराशाजनक स्थिति को चिन्हांकित करता है और यह तर्कगत् बल देता है कि वे पूर्व की अपेक्षा और अधिक दयनीय स्थिति का अनुभव कर रहे है। सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा पर प्रभावी एवं ठोस नीतिगत् हस्तक्षेप किया जाना आवश्यक हैं।

Keywords:

- प्रवासी महिला श्रमिक
- सामाजिक-आर्थिक
- वैश्विक महामारी कोविड-19

Cite this article:
देवांगन, साहु, और गजपाल (2022). वैश्विक महामारी कोविड-19 का प्रवासी महिला श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्थित पर प्रभाव-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में). Journal of Ravishankar University (Part-A: SOCIAL-SCIENCE), 28(1), pp.80-92.DOI: https://doi.org/10.52228/JRUA.2022-28-1-10

REFERENCES:

1. WHO.https://pubmed.ncbi.nl,.gov(05.08.2021)ø

Head,
Dept. of Sociology & Social Work,
Ravishankar Shukla University,
Raipur (C.G.)

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कमार जनजाति की महिलाओं की रोजगार एवं ऋणग्रस्तता की स्थिति का अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में

दीपिका कंवर, डॉ. एल. एस. गजपाल , मुकेश सिंह

1. शोधार्थी : समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
2. एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
3. शोधार्थी : शास. जे. यो. छ. ग. महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश- कमार जनजाति शासन द्वारा घोषित एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। यह गोंड़ की एक उपजाति है। कमार मध्य भारत की अन्य जनजातियों की भांति प्रोटोआस्ट्रेलायड प्रजाति के हैं। कमार द्रविडियन परिवार से संबंधित है। इनका संकेन्द्रण मुख्यतः गरियाबंद जिले में तथा आंशिक रूप से धमतरी जिले में है। जनजातीय समुदाय में ऋणग्रस्तता एक प्रमुख समस्या है। राज्य में इन्हें विशेष पिछड़ी जनजाति के श्रेणी में रखा गया है इनके विकास एवं उत्थान के लिए गरियाबंद जिले में कमार विकास प्राधिकरण का गठन किया गया है। अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इन्हें साहूकारों, महाजनों एवं बैंकों से ऋण लेना पड़ता है। उचित समय पर ऋण नहीं चुकाने पर जनजातियों को शोषण का शिकार का होना पड़ता है। यह अध्ययन गरियाबंद जिला के कमार अनुसूचित जनजाति पर आधारित है। इस अध्ययन हेतु गरियाबंद जिले के 3 कमार बाहुल्य ग्रामों का चयन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से 50 कमार परिवारों के ऋणग्रस्तता की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन की प्राप्त जानकारी से ज्ञात होता है कि कमार जनजाति परिवार में ऋणग्रस्तता जैसी गंभीर समस्या विद्यमान है ।

महत्वपूर्ण शब्द- कमार जनजाति, ऋणग्रस्तता

प्रस्तावना- कमार अनुसूचित जनजाति भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है। कमार जनजाति दुर्गम एवं अभावग्रस्त क्षेत्र में निवास करने के कारण अत्यंत पिछड़ी हुई है, जिसके कारण विकास से वंचित है। कमार जनजाति के पिछड़ेपन के कारण महिलाओं की समस्याओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है, अतः उन्हें विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई है। सरकारी कार्यक्रमों के प्रयासों के बावजूद कमार जनजाति की महिलाओं की स्थिति निम्नतम है । सरकारी प्रयासों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से जनजाति समाज की स्थिति को ऊपर उठाने के लिये निरंतर प्रयासरत है फिर भी यह जनजाति समाज विकास से स्वयं को जोड़ पाने में असफल रहा है। तमाम कोशिशों के बाद भी जनजाति समाज अशिक्षा, ऋणग्रसस्ता, शोषण तथा निर्धनता जैसी सामाजिक समस्याओं से ग्रसित है। ऐसे में कमार जनजाति की महिलाओं की वर्तमान स्थिति एवं समस्याओं का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

Head, S.O.S. in Sociology & Social Work, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)